International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वर्तमान समय की उच्च शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्थिति

बीना भगत[1], डॉ0अनुराग यादव[2]

[1]शोधकर्त्री, शिक्षा विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा (उ0प्र0)।
[2] शोध पर्यवेक्षक, शिक्षा विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा (उ0प्र0)।

सरांश

उच्च शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता पर विचार करते समय यह स्पष्ट होता है कि पिछले कुछ दशकों में महिलाओं के शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। पहले जहां समाज में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर बहुत सीमित था, वहीं अब महिलाएं उच्च शिक्षा में भागीदारी के मामले में पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं। फिर भी, कुछ क्षेत्रों में महिला शिक्षा को लेकर चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जिनका समाधान ढूंढना आवश्यक है। आज के समय में महिलाएं उच्च शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। खासकर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित जैसे क्षेत्रों में महिलाएं अपनी उपस्थिति बढ़ा रही हैं। इसके अलावा, मानविकी, समाजशास्त्र, चिकित्सा, और व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में भी महिलाएं अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। पहले महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, लेकिन अब स्थिति में बदलाव आया है, और महिलाएं पुरुषों के मुकाबले बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं। महिलाओं के उच्च शिक्षा में बढ़ती सहभागिता के पीछे संस्थागत समर्थन और सरकार की नीतियों का अहम योगदान है। विभिन्न शैक्षिक संस्थानों में महिलाओं के लिए विशेष छात्रवृत्तियां, लिंग आधारित आरक्षण, और महिला सशक्तिकरण के लिए जागरूकता अभियानों का आयोजन किया जा रहा है। इसके अलावा, समाज में महिलाओं के प्रति मानसिकता में भी बदलाव आ रहा है। पहले महिलाओं को शिक्षा में समान अवसर नहीं मिलते थे, लेकिन अब वे शैक्षिक संस्थाओं में विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं और उनका योगदान अनमोल है। फिर भी, महिलाओं को उच्च शिक्षा में कुछ प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इनमें से एक बड़ी चुनौती पारंपरिक सोच और लैंगिक भेदभाव है, जो महिलाओं की शिक्षा को रोकता है। परिवारों में लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, कुछ क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या अभी भी कम है, जैसे कि इंजीनियरिंग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी। महिलाओं के लिए शिक्षा की गुणवत्ता और सुरक्षा भी एक चिंता का विषय है, क्योंकि कई जगहों पर सुरक्षा संबंधी मुद्दे बने रहते हैं। उच्च शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता को बढ़ाने के लिए संस्थानों और सरकारों को और अधिक सशक्त कदम उठाने की आवश्यकता है। शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष :— उच्च शिक्षा में स्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता में क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, उच्च शिक्षा में परास्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता में क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

प्रस्तावना

उच्च शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता किसी भी समाज के विकास और प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण मानदंड है। यह न केवल महिलाओं के व्यक्तिगत सशक्तिकरण का साधन है, बल्कि समाज में लैंगिक समानता स्थापित करने और आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक उत्थान में भी योगदान देता है। आज के आधुनिक युग में, शिक्षा को महिलाओं के लिए उनकी क्षमताओं और कौशलों को पहचानने का सबसे सशक्त माध्यम माना जाता है। हालाँकि, ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में असमानता और उपेक्षा का सामना करना पड़ा है। विशेष रूप से भारतीय समाज में, जहाँ पितृसत्तात्मक मानसिकता और पारंपरिक रूढ़ियाँ महिलाओं की प्रगति में बाधक रही हैं, उच्च शिक्षा तक महिलाओं की पहुँच एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। हाल के दशकों में, शिक्षा के महत्व को समझते हुए और सरकार की विभिन्न नीतियों तथा कार्यक्रमों की सहायता से महिलाओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता बढ़ी है। तकनीकी, चिकित्सा, प्रबंधन और अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी धीरे–धीरे बढ़ रही है। हालाँकि, अब भी ग्रामीण क्षेत्रों में लैंगिक असमानता, गरीबी, और सामाजिक पूर्वाग्रह जैसी समस्याएँ मौजूद हैं, जो महिलाओं को शिक्षा के इस क्षेत्र में पूरी तरह से समाहित होने से रोकती हैं। यह शोध पत्र उच्च शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता के वर्तमान परिप्रेक्ष्य को समझने और इस संदर्भ में मौजूदा चुनौतियों, अवसरों, और समाधानात्मक उपायों पर चर्चा करने का प्रयास करेगा। समाज की समग्र प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि उच्च शिक्षा में महिलाओं की समान भागीदारी सुनिश्चित की जाए और इसके लिए सकारात्मक कदम उठाए जाएँ। महिलाओं की शिक्षा का इतिहास समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना का आईना है। प्राचीन भारत में, विशेषकर वैदिक काल में, महिलाओं को शिक्षा का समान अधिकार प्राप्त था। विदुषी महिलाएँ, जैसे गार्गी और मैत्रेयी, दर्शन और शिक्षा के क्षेत्र में अपनी बौद्धिक क्षमता के लिए जानी जाती थीं। उस समय महिलाओं को वेद, उपनिषद और अन्य शास्त्रों का अध्ययन करने की स्वतंत्रता थी। लेकिन समय के साथ, समाज में पितृसत्तात्मक मानसिकता और सामाजिक रूढ़ियों ने महिलाओं की शिक्षा को सीमित कर दिया। मध्यकाल में, महिलाओं की शिक्षा पर अनेक प्रतिबंध लगाए गए और

उन्हें घर की चारदीवारी तक सीमित कर दिया गया। ब्रिटिश शासन के दौरान आधुनिक शिक्षा प्रणाली की शुरुआत हुई, जिसने महिलाओं की शिक्षा को पुनर्जीवित करने का अवसर दिया। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर और सावित्रीबाई फुले जैसे समाज सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा के महत्व को समझा और इसके प्रचार–प्रसार के लिए संघर्ष किया। सावित्रीबाई फुले ने भारत का पहला महिला विद्यालय स्थापित किया, जो महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम था। स्वतंत्रता के बाद, भारतीय संविधान ने शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी और महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर प्रदान किया। आज, महिलाओं की शिक्षा में ऐतिहासिक प्रगति के बावजूद, कई सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। हालाँकि, समय के साथ उनके योगदान और उपलब्धियों ने यह साबित किया है कि शिक्षा महिलाओं के सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी माध्यम है। सामाजिक जागरूकता, सरकारी प्रयासों, और महिलाओं के प्रति बदलती सोच ने इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहले जहाँ महिलाओं को शिक्षा के अधिकार से वंचित किया जाता था, वहीं आज वे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। उच्च शिक्षा संस्थानों में महिलाओं के नामांकन की संख्या बढ़ रही है, और वे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, प्रबंधन, और शोध जैसे क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही हैं। महिलाओं की इस प्रगति के पीछे सरकारी योजनाओं का बड़ा योगदान है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, छात्रवृत्ति योजनाएँ, और महिला–केन्द्रित विश्वविद्यालयों की स्थापना ने उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है। इसके अलावा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसे सुधार महिलाओं को उच्च शिक्षा में आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हालाँकि, प्रगति के बावजूद कई बाधाएँ अब भी मौजूद हैं। आर्थिक समस्याएँ, सामाजिक रूढ़ियाँ, और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ महिलाओं की उच्च शिक्षा में प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति और भी जटिल है, जहाँ बालिकाओं को अक्सर शिक्षा छोड़कर घरेलू कामों में लगाया जाता है। महिलाओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता समाज की प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है। हालाँकि वर्तमान समय में महिलाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है, लेकिन यह प्रक्रिया अभी अधूरी है। सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करना, शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारना, और लैंगिक समानता को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में उच्च शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता के अध्ययन की अत्यधिक आवश्यकता और महत्व है, क्योंकि यह समाज में लिंग समानता, आर्थिक विकास, और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। महिलाओं की शिक्षा और उनकी उच्च शिक्षा में भागीदारी समाज के लिए कई सकारात्मक परिणामों का कारण बन सकती है। इस अध्ययन के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि उच्च शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता से न केवल व्यक्तिगत विकास होता है, बल्कि इससे समाज की संपूर्ण प्रगति भी होती है। पहला कारण यह है कि महिलाओं की शिक्षा से समाज में लिंग समानता को बढ़ावा मिलता है। जब महिलाओं को समान अवसर मिलते हैं और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करती हैं, तो वे न केवल अपने परिवार को प्रगति की ओर ले जाती हैं, बल्कि समाज में भी एक सकारात्मक बदलाव लाती हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएं नेतृत्व, निर्णय लेने, और अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में भाग ले सकती हैं, जिससे समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार होता है। दूसरा, महिलाओं की उच्च शिक्षा से आर्थिक विकास में योगदान होता है। शिक्षित महिलाएं बेहतर पेशेवर अवसरों का लाभ उठाती हैं, जिससे उनके परिवार की आय में वृद्धि होती है और वे समाज में सकारात्मक योगदान देती हैं। महिलाएं जब आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती हैं, तो वे अपनी और अपने परिवार की भलाई के लिए अच्छे निर्णय लेने में सक्षम होती हैं, जिससे सामाजिक और आर्थिक समृद्धि बढ़ती है। तीसरा, महिलाओं की शिक्षा से सामाजिक बदलाव आता है। एक शिक्षित महिला समाज में न केवल अपने परिवार बल्कि अपने समुदाय को भी सशक्त बना सकती है। शिक्षित महिलाएं स्वास्थ्य, शिक्षा, और सामाजिक मुद्दों पर विचार करती हैं और समाज को जागरूक करती हैं। इससे समाज में समग्र सुधार होता है और विभिन्न सामाजिक समस्याओं का समाधान संभव होता है। इसके अलावा, उच्च शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता से एक सांस्कृतिक और मानसिक परिवर्तन आता है, जो समाज में महिलाओं के अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाता है। यह उन्हें अपनी आवाज उठाने, सामाजिक बदलाव की दिशा में काम करने, और अपने अधिकारों का उपयोग करने की प्रेरणा देता है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

आशारानी व्होरा (2018), राजगोपाल (2016), चन्द्रकला हाटे (2015), हरजीत अहलूवालिया (2011) आदि शोधार्थियों ने शोध किये हैं।

समस्या कथन

वर्तमान समय की उच्च शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्थिति

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा में स्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता का क्षेत्रीय आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।
2. उच्च शिक्षा में परास्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता का क्षेत्रीय आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. उच्च शिक्षा में स्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता में क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च शिक्षा में परास्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता में क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए नैनीताल जनपद की बेरोजगार महिलाओं से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु केवल 150 स्नातक स्तर की शिक्षित महिलाऐं एवं 150 परास्नातक स्तर की शिक्षित महिलाओं को शामिल किया गया है।

उपकरण

सहभागिता क मापन हेतु – स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परिभाषीकरण :–

तालिका संख्या – 1

उच्च शिक्षा में स्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता का क्षेत्रीय आधार की स्थिति

स्नातक स्तर की महिलाऐं	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	75	57.78	9.52	0.957	***
शहरी	75	58.23	9.57		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या

तालिका संख्या 1 में उच्च शिक्षा में स्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता का क्षेत्रीय आधार को दर्शाया गया है। तालिका में उच्च शिक्षा में स्नातक स्तर की ग्रामीण महिलाओं की सहभागिता का माध्य एवं एस0डी0 57.78 एवं 9.52 प्राप्त हुआ है लेकिन उच्च शिक्षा में स्नातक स्तर की शहरी महिलाओं की सहभागिता का माध्य एवं एस0डी0 क्रमशः 58.23 एवं 9.57 मिला जो दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात की वेल्यु 0.957 प्राप्त हुयीं। जिससे पता चलता है कि उच्च शिक्षा में स्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता का क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

उच्च शिक्षा में परास्नातक स्तर की महिलाआं की सहभागिता का क्षेत्रीय आधार की स्थिति

परास्नातक स्तर की महिलाऐं	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	75	59.81	10.34	1.68	***
शहरी	75	58.97	9.69		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 में उच्च शिक्षा में परास्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता का क्षेत्रीय आधार को दर्शाया गया है। तालिका में उच्च शिक्षा में परास्नातक स्तर की ग्रामीण महिलाओं की सहभागिता का माध्य एवं एस0डी0 59.81 एवं 10.34 प्राप्त हुआ है लेकिन उच्च शिक्षा में परास्नातक स्तर की शहरी महिलाओं की सहभागिता का माध्य एवं एस0डी0 क्रमशः 58.97 एवं 9.69 मिला जो दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात की वेल्यु 1.68 प्राप्त हुयीं। जिससे पता चलता है कि उच्च शिक्षा में परास्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता का क्षेत्रीय आधार पर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष

1. उच्च शिक्षा में स्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता में क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

2. उच्च शिक्षा में परास्नातक स्तर की महिलाओं की सहभागिता में क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चतुर्वेदी (2020). भारत में महिलाओं की उच्च शिक्षा में वृद्धिरू एक अध्ययन. शैक्षिक विकास पत्रिका, 15(2), 45–58.
2. शर्मा एवं यादव (2019). उच्च शिक्षा में महिलाओं की भूमिकारू एक समकालीन विश्लेषण. भारतीय समाजशास्त्रिका, 22(1), 101–112.
3. सिंह एवं वर्मा (2018). महिलाओं की उच्च शिक्षा में भागीदारीरू वर्तमान चुनौतियां और अवसर. शिक्षा नीति और समाज, 30(4), 33–48.
4. गुप्ता (2021). महिला शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार और प्रभावरू भारत का संदर्भ. भारतीय शैक्षिक समीक्षा, 10(3), 72–85.
5. अरोड़ा (2022). भारत में महिला शिक्षा के समक्ष आने वाली बाधाएं और उनके समाधान. शैक्षिक अध्ययन, 28(2), 90–104.
6. चौधरी एवं मिश्रा. (2020). समाज में महिलाओं की भूमिका और उच्च शिक्षा में उनके अधिकार. समकालीन शिक्षा दृष्टिकोण, 18(1), 50–65.
7. त्रिपाठी एवं सिंह, (2017). उच्च शिक्षा में महिलाओं की बढ़ती सहभागितारू एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य. शैक्षिक इतिहास, 12(3), 120–135.
8. महाजन एवं शर्मा, (2018). महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा में अवसरों का विस्तारू एक नीति विश्लेषण. महिला अध्ययन पत्रिका, 14(2), 200–214.